।। श्रीपरमात्मने नमः ।।

मूक सत्संग

ब्रह्मलीन पूज्यपाद स्वामी श्रीशरणानन्दजी महाराज

त्वमेव माता च पिता त्वमेव
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव
त्वमेव सर्वं मम देवदेव।।

संकलनकर्ता
राजेन्द्र कुमार धवन

www.swamisharnanandji.org

।। ॐ श्रीपरमात्मने नमः।।

मूक सत्संग

1. मूक सत्संग सभी साधनोंकी भूमि है। -प्रेरणा पथ 128
2. समस्त साधनाएँ मूक सत्संगसे आरम्भ होती हैं और मूक सत्संगमें ही विलीन होती हैं। -प्रेरणा पथ 129
3. जिस प्रकार प्रत्येक पौधेके लिये भूमि अनिवार्य है, उसी प्रकार प्रत्येक साधकके लिये मूक सत्संग अनिवार्य है। -मूक सत्संग .201
4. मूक सत्संग वास्तवमें आदि साधन है अथवा यों कहो कि अन्तिम साधन है। कारण कि जो कुछ किया जाता है, उसके मूलमें 'न करना' ही होता है और करनेके अन्तमें भी 'न करना' ही होता है। इस दृष्टिसे आदि और अन्तमें मूक होनेपर ही सभीको सब कुछ मिलता है। -पाथेय 36
5. मूक सत्संगमें सभी साधनोंका समावेश है। -पाथेय 51
6. मूक सत्संग विश्वास तथा विचार दोनों ही पथोंके लिये समान है। कारण कि विचारका उदय तथा प्रीतिकी जागृति मूक सत्संगसे स्वतः होती है। -मूक सत्संग.170
7. प्रत्येक साधकके लिये यह अत्यन्त अनिवार्य है कि वह प्रत्येक कार्यके आदि और अन्तमें स्वभावसे ही शान्त होकर मूक सत्संग करनेका स्वभाव बना ले। -प्रेरणा पथ 128
8. यह जो शान्त रहना है, यह बहुत बड़ा साधन है। पर इस रहस्यको कोई बिरले ही जानते हैं। -संत-उद्‌बोधन 68
9. जब हम मूक सत्संग करनेका स्वभाव बना लेंगे, तो आप सच मानिये कि जो सत्य किसीको भी मिला है, वह हमें और आपको मिलेगा। -प्रेरणा पथ 128-129
10. भीतर-बाहरसे अकेले रहनेका स्वभाव बनाओ। ऐसा करनेसे आपको वह (आनन्द) मिल जायगा, जो आपके बिना नहीं रह सकता अथवा यों कहो 'जो आपकी आवश्यकता है'। -सन्त-समागम 2/107
11. जिस समय आप अकेले हो जायँगे, वे बिना बुलाये आ जायँगे। यदि उनसे मिलना चाहते हो तो अकेले हो जाओ। -संतपत्रावली 1/87-88
12. मौनका अर्थ खाली चुप होना नहीं है, बल्कि न सोचना भी है, न देखना भी है अपनी ओरसे। मुझे जो चाहिये, सो तो मुझमें है, फिर इन्द्रियोंकी क्या अपेक्षा ? मौनके पीछे एक दर्शन है कि हमको जो चाहिये, वह अपनेमें है, अपना है और अभी है। -संत-उद्‌बोधन 18-19
13. व्यर्थ-चिन्तनके नाशके लिये एकमात्र मूक-सत्संग ही अचूक उपाय है अर्थात् श्रमरहित होना है। -मूक सत्संग.115
14. मूक सत्संगसे विस्मृति नाश होती है। -मूक सत्संग.131
15. मूक सत्संग कल्पतरुके समान है अर्थात् आवश्यक सामर्थ्य, विचारका उदय, प्रीतिकी जागृति मूक सत्संगमें ही निहित है। -मूक सत्संग.142
16. मूक सत्संगके बिना देहाभिमानका नाश सम्भव नहीं है। -मूक सत्संग.175
17. मूक सत्संग मानवको किसी स्थितिमें आबद्ध नहीं करता, अपितु सभीसे असंग करता है। -मूक सत्संग.197
18. मूक सत्संगसे निर्मम, निष्काम एवं असंग होनेकी सामर्थ्य स्वतः आ जाती है। -मूक सत्संग.215
19. मूक सत्संग अकर्मण्यता, जड़ता एवं अभावमें आबद्ध नहीं होने देता, अपितु कर्तव्य-परायणता, चिन्मयता एवं पूर्णतासे अभिन्न करता है। -मूक सत्संग.190
20. मूक सत्संग कोई अभ्यास, अनुष्ठान एवं श्रमसाध्य प्रयोग नहीं है, अपितु सहज तथा स्वाभाविक स्वतःसिद्ध तथ्य है। नित्यप्राप्तकी प्राप्ति और पराश्रयकी निवृत्ति मूक सत्संगमें ही निहित है। -मूक सत्संग.216
21. मूक सत्संगके बिना सत्‌का संग सम्भव नहीं है। -सत्संग और साधन 82

www.swamisharnanandji.org

22. सत्-चर्चा तथा सत्-चिन्तन करते हुए आंशिक असत्का आश्रय रहता है; किन्तु मूक सत्संगसे सर्वांशमें सत्संग होता है अथवा यों कहो कि मूक सत्संग ही सत्संग है। -मूक सत्संग.215
23. मूक सत्संग तथा नित्ययोग एक ही सिक्केके दो पहलू हैं। इन दोनोंमें स्वरूपसे विभाजन नहीं है, अपितु मूक सत्संगमें ही नित्ययोग और नित्ययोगमें ही मूक सत्संग ओतप्रोत है। -मूक सत्संग.216
24. यह नियम है कि जब मानव वस्तु, अवस्था, परिस्थितिके आश्रयसे रहित होता है, तब सर्वाधारका आधार स्वतः प्राप्त हो जाता है। इस दृष्टिसे आस्थामें सजीवता मूक सत्संगसे ही साध्य है। -मूक सत्संग.216
25. मूक सत्संगमें आलस्य तथा श्रम दोनोंका अभाव है। इन्द्रियों, मन, बुद्धि आदिकी चेष्टाओंसे पूर्ण असंगता तथा असहयोग है। -पाथेय 54
26. असत्के संगका प्रभाव प्रकट हुए बिना नाश नहीं होता। श्रम-साध्य साधन उस प्रभावको दबाता है, प्रकट नहीं होने देता। मूक सत्संग उस प्रभावको प्रकट करता है। -सत्संग और साधन 80
27. योग्यता, रुचि तथा सामर्थ्यका भेद होनेपर भी मूक सत्संग सभीके लिये समान है। मूक सत्संगके द्वारा समस्त असाधनोंका नाश हो सकता है और योग्यता, रुचि तथा सामर्थ्यके अनुरूप व्यक्तिगत साधनकी अभिव्यक्ति भी हो सकती है। -सत्संग और साधन 91
28. मूक सत्संगके लिये तो किसी परिस्थिति-विशेषकी अपेक्षा ही नहीं है। अतः साधक चाहे जिस परिस्थितिमें हो, मूक सत्संग स्वाधीनतापूर्वक हो सकता है। -सत्संग और साधन 91
29. मूक सत्संगका आरम्भ शान्तरससे और अन्त अनन्तरसमें होता है। -साधन-तत्त्व 87
30. मूक सत्संगके बिना अहम् भावका अन्त हो ही नहीं सकता। अतः प्रत्येक साधकको सब कुछ करनेपर भी मूक सत्संगको अपना लेना अनिवार्य है; क्योंकि बिना उसके अपनाये अचाह, अप्रयत्न एवं अभिन्नता सम्भव नहीं है। -साधन-तत्त्व 90
31. मूक सत्संगसे ही सर्वतोमुखी विकास होता है। -मूक सत्संग.36
32. जीवनकी पूर्णता, जो विश्राम, स्वाधीनता तथा प्रेममें निहित है, मूक सत्संगसे ही सिद्ध है। -सत्संग और साधन 90

****

हम थोड़ी देरके लिये, दो, चार या दस मिनट, इससे ज्यादा नहीं, बिना कोई काम करे अकेले रहनेका स्वभाव बनायें। यह कोशिश करें कि दस मिनटतक हम कोई काम नहीं करेंगे, अकेले रहेंगे, बिना सामान और बिना साथीके रहेंगे, शरीरको लेकर नहीं। हमें जो अपने बहुत-से साथी मालूम होते हैं, बहुत-सा सामान मालूम होता है, उसके बिना रहेंगे। इसका अर्थ यह नहीं है कि हम साथियोंको नाराज कर दें या सामानको बरबाद कर दें। ऐसा मेरा मतलब नहीं है। लेकिन थोड़ी देरके लिये ऐसा अनुभव करें कि मान लो, हमारे पास हमारा शरीर भी नहीं रहेगा, तब हम होंगे कि नहीं ? ऐसा प्रश्न अपने सामने रखें।

अगर हम थोड़ी-थोड़ी देरके लिये विश्राम करनेका स्वभाव बना लें, अकेले होनेका स्वभाव बना लें, तो हमें अपनेमें ही, कहीं बाहर नहीं, प्रीतमकी प्राप्ति हो जायगी।

(सन्तवाणी 6/174-176)